सलोक महल्ला 9

ੴ सतगिुर प्रसादि॥

सलोक महला ९ ॥

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥
कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥

बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥
कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥२॥

तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति॥
कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति॥३॥

बिरिधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि॥
कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥

धनु दारा स्मपति सगल जिनि अपुनी करि मानि॥
इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि॥५॥

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥
कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि॥६॥

तनु धनु जहि तो कउ दीओ तां सउि नेहु न कीन ॥
कहु नानक नर बावरे अब कउि डोलत दीन ॥७॥

तनु धनु स्मपै सुख दीओ अरु जहि नीके धाम ॥
कहु नानक सुनु रे मना समिरत काहि नि रामु ॥८॥

सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहनि कोइ ॥
कहु नानक सुनि रै मना तहि समिरत गति होइ ॥९॥

जहि समिरत गति पाईऐ तहि भजु रे तै मीत ॥
कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥१०॥

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥
जहि ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥
कहु नानक तहि भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥

सुखु दुखु जहि परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भिगवान ॥१३॥

उसतति निंदिआ नाहि जिहि किंचन लोह समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१५॥

भै काहू कउ देत नहि निहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥
कहु नानक सुनु रे मना तिहि नर माथै भागु ॥१७॥

जिहि मिइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥
कहु नानक सुनु रे मना तिहि घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥

जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥
कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥१९॥

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिहि काम ॥२०॥

जहिबा गुन गोबदि भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥
कहु नानक सुनि रे मना परहि नि जम कै धाम ॥२१॥

जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥
कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥

जउि सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥
इन मै कछु साचो नही नानक बनि भगवान ॥२३॥

नसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥
कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जहि चीति ॥२४॥

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बनिसै नीत ॥
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥

प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥
कहु नानक बनि हरि भजन परत ताहि जिम फंध ॥२६॥

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥

माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥

जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तहि जानु ॥
हरि जिन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥२९॥

मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥३०॥

प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥
कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जिम फंध ॥३१॥

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥३२॥

जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥
कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥३३॥

जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥
दुरमति सिउि नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥३४॥

बाल जुआनी अरु बरिधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥
कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥३५॥

करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥
नानक समिओ रमि गइओ अब कउ रोवत अंध ॥३६॥

मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥
नानक मूरति चित्रि जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥

नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥
चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥

जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥
कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥३९॥

जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥
कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥

झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥
इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥

गरबु करतु है देह को बनिसै छनि मै मीत ॥
जहि प्रानी हरि जिसु कहिओ नानक तहि जिगु जीति ॥४२॥

जहि घटि सिमिरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥
तहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥४३॥

एक भगति भिगवान जहि प्रानी कै नाहि मनि ॥
जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥

सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नति ॥
नानक इह बधि हरि भजउ इक मनि हुइ इक चिति ॥४५॥

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥
नानक नहि फल जात तहि जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥

सरि क्मपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥
कहु नानक इह बधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥४७॥

नजि करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥
नानक थिरु हरि भगति है तहि राखो मन माहि ॥४८॥

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥४९॥

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥५०॥

चिति ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥५२॥

दोहरा ॥

बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥
कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥५३॥

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥
कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥५५॥

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥
कहु नानक इह जगत मै कनि जपिओ गुर मंतु ॥५६॥

राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥
जहि समिरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥५७॥१॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com